Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 6, December-2022, ISSN 2230-7540

परसाई जी के साहित्य में राजनीतिक व्यंग

राजेन्द्र कुमार पिवहरे*

सहायक प्राध्यापक(हिन्दी), शासकीय महाविद्यालय वेंकटनगर, जिला अनूपपुर(मध्यप्रदेश)

सार - परसाई जी हिंदी साहित्य जगत के महान व्यंगकारों एवं प्रसिद्ध लेखकों में से एक थे। व्यंग्य को हिंदी साहित्य में एक विधा के रूप में पहचान दिलाने वाले परसाई ने व्यंग्य को मनोरंजन की पुरानी एवं परंपरागत परिधि से बाहर निकालकर समाज कल्याण से जोड़कर प्रस्तुत किया। इनके माध्यम से उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार और शोषण पर व्यंग्य किए जो आज भी प्रासंगिक हैं। हालांकि, उन्होंने कहानी, उपन्यास और संस्मरण भी लिखे, लेकिन उन्हें उनके व्यंग्य के जरिए किए जाने वाले तीखे प्रहार के लिए अधिक जाना जाता है।परसाई जी ने सामाजिक रूढ़ियों, राजनीतिक विडम्बनाओं तथा सामयिक समस्याओं पर व्यंग्य किया है और यथेष्ट कीर्ति पाई है। परसाईजी एक सफल व्यंग्कार हैं। वे व्यंग्य के अनुरूप ही भाषा लिखने में कुशल हैं। इनकी रचनाओं में भाषा के बोलचाल के शब्दों, तत्सम शब्दों तथा विदेशी भाषाओं के शब्दों का चयन भी उच्च कोटि का है।

कीवर्ड - परसाई जी, व्यंग, राजनीतिक, सामाजिक।

----------X----------

परिचय

व्यंग्य दृश्य कलाओं, साहित्य और प्रदर्शन कलाओं में पाया जाने वाला एक प्रकार का हास्य है, जिसका उद्देश्य अपने दर्शकों को दोष, मूर्खता, गालियाँ और दूसरों की कमियों की कीमत पर हँसाना है, जो कथित दोषों को शर्मसार करने या उजागर करने के प्रयास में हैं। व्यक्तियों, निगमों, सरकारों, या समाज के समग्र रूप से। व्यंग्य का प्राथमिक लक्ष्य हंसी नहीं है, बल्कि रचनात्मक सामाजिक समालोचना है, स्थानीय और प्रणालीगत दोनों समस्याओं को उजागर करने के लिए बुद्धि का उपयोग करना।

मजबूत विडंबना या व्यंग्य व्यंग्य की पहचान है; "व्यंग्य में, विडंबना उग्रवादी है," साहित्यिक आलोचक नॉर्थ्रॉप फ्राय ने इसे रखा। हालांकि, व्यंग्यकार अक्सर अपने विचारों को व्यक्त करते समय पैरोडी, बर्लेस्क, अतिशयोक्ति, तुलना, तुलना, सादृश्य और द्विअर्थी जैसे अन्य उपकरणों का भी उपयोग करते हैं। यह "आतंकवादी" विडंबना या कटाक्ष अक्सर सटीक विचारों या प्रथाओं को प्रस्तुत करता है जो व्यंग्यकार "प्राकृतिक" के रूप में स्वीकृत या स्वीकार किए जाने के रूप में आलोचना करना चाहता है।इंटरनेट मेम्स, किताबें, नाटक, कमेंट्री, गाने, फिल्में, टीवी कार्यक्रम, और कला और मीडिया के अन्य रूप (गीतात्मक सामग्री सहित) सभी अलग-अलग डिग्री के लिए व्यंग्य का उपयोग करते हैं। [1]

हिंदी साहित्य के सबसे प्रसिद्ध व्यंग्यकारों और हास्यकारों में से एक हरिशंकर परसाई हैं। परसाई के विषम मानवीय व्यवहार और समाज पर टिप्पणी के चित्रण ने नाट्य समूहों से लेकर स्कूल की पाठ्यपुस्तकों तक, विभिन्न प्रकार की सेटिंग्स में एक समर्पित स्थान प्राप्त किया है। इसलिए, अभिनेता और निर्देशक प्रतीक कोठारी आज मुंबई में एक व्यापक अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के लिए लेखक की रचनात्मकता को पेश करने के प्रयास में हरिशंकर परसाई के तूचीयापे व्यंग्य नामक एक कार्यक्रम में परसाई की तीन कहानियों को प्रस्तुत करेंगे।

जब लोगों का एक समूह मंच पर प्रदर्शन करने के लिए इकट्ठा होता है, तो बातचीत स्वाभाविक रूप से नाटकों और उनके लेखकों की ओर मुड़ जाती है। इनमें से एक पाठ के दौरान ही प्रतीक का परिचय परसाई से हुआ था; उस समय तक उन्होंने केवल प्रेमचंद, (इस्मत) चुगताई और मंटो के बारे में सुना था। प्रतीक ने अपनी बुद्धि और हास्य प्रतिभा से मुग्ध होकर लेखक की रचनाओं में सबसे पहले भाग लिया, और लेखक की कहानियों को अपनी अनूठी शैली में फिर से बनाने के विचार के साथ उभरा।

www.ignited.in

एक फिल्म कथा, एक लड़की पांच दीवाने, और भेद और भेदिये में प्रतीक के प्रदर्शन में कथा, रंगमंच और स्टैंड-अप कॉमेडी के तत्व शामिल हैं। कलाकार की यह भी इच्छा होती है कि वह हिंदी को ही एक भाषा के रूप में सम्मान दे। यह इस बारे में भी है कि एक भाषा के रूप में हिंदी - इसके शब्द, इसकी धुन और इसकी ध्वनि - इतिहास में कैसे खो गई है। इसलिए, यह एक गौण परिणाम है जिसका हम स्वागत करते हैं। [2]

हरिशंकर परसाई

वह हिंदी में एक हास्यकार और लेखक के रूप में अपने काम के लिए जाने जाते थे। उनका जन्म स्थान जमानी था, जो मध्य प्रदेश के होशंगाबाद में स्थित है। वह हिंदी में लिखने वाले पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने व्यंग्य को एक विधा का दर्जा दिया और इसे समाज की व्यापक चिंताओं से जोड़ा। उन्होंने व्यंग्य को विनोदी मनोरंजन की प्रथागत सीमा से मुक्त करके ऐसा किया। ऐसा करने वाले वे पहले व्यक्ति माने जाते हैं। उनकी व्यंग्य रचनाएँ न केवल हमारा मन बहलाती हैं, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं से भी रूबरू कराती हैं, जिनसे उन्होंने मध्यवर्ग के मन की उन सच्चाइयों को बड़ी बारीकी से पकड़ा है, जो किसी अन्य राजनीतिक व्यवस्था में पिस रही हैं। उनकी रचनाएँ न केवल हमारा मन बहलाती हैं, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं से रूबरू भी कराती हैं। जीवन के लिए सामाजिक पाखंड और परंपरावादी दृष्टिकोण के अलावा, जीवन भर विशिल्लियों की भी अपनी पहचान उन श्रेणियों के संदर्भ में होती है जिनमें वे शामिल हैं। एक रचनात्मक तरीका। क्योंकि लेखक ठीक उसके सामने बैठा है, उसके शब्दों का प्रयोग किसी प्रकार की असामान्य रूप से सहज परिचितता का अनुभव करता है। व्यंग्य "द चिलिंग रिपब्लिक" के केंद्र में है, जिसे हरिशंकर परसाई ने लिखा था। [3]

परसाई का जीवन परिचय

हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जनपद में इटारसी के निकट स्थित जमानी नामक ग्राम में 22 अगसत 1924 ई. को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिखा से स्नातक तक की शिक्षा मध्य प्रदेश में हुई। तदुपरान्त इन्होंने नागजुर विश्वविद्यालय से एम.ए. हिन्दी की परीखा उत्तीर्ण की। इनके पश्चात् कुछ वर्षों तक इन्होंने अध्यापन-कार्य किया।

इन्होंने बाल्यावस्था से ही कला एवं साहित्य में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया था। वे अध्यापन के साथ-साथ साहित्य-सृजन भी करते रहे। दोनो कार्य साथ-साथ न चलने के कारण अध्यापन-कार्य छोड़कर साहित्य-साधना को ही इन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया ।

इन्होंने जबलपुर में 'वसुधा' नामक पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन का काग्र प्रारम्भ किया, लेकिन अर्थ के अभाव के कारण यह बन्द करना पड़ा। इनके निबन्ध और व्यंग्य समसामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकशित होते रहते थे, लेकिन इन्होंने नियमित रूप से धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान के लिए अपनी रचनाएँ लिखीं। 10 अगस्त 1995 ई. को इनका स्वर्गवास हो गया।

हिन्दी गद्य-साहित्य के व्यंग्यकारों में हरिशंकर परसाई अग्रगण्य थे। इनके व्यंग्य-विषय सामाजिक एवं राजनीतिक रहे। व्यंग्य के अतिरिक्त इन्होंने साळितय की अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई थी, परन्तु इनकी प्रसिद्धि व्यंग्याकार के रूप में ही हुई।[4]

- **शिक्षा**

हरिशंकर परसाई ने अपनी गाँव से प्राम्भिक शिक्षा जमानी गाँव से प्राप्त करने के बाद वे नागपुर चले आये थे। 'नागपुर विश्वविद्यालय' से उन्होंने एम. ए. हिंदी की परीक्षा पास की। कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन कार्य भी किया। इसके बाद उन्होंने स्वतंत्र लेखन प्रारंभ कर दिया। उन्होंने जबलपुर से साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का प्रकाशन भी किया, लेकिन घाटा होने के कारण इसे बंद करना पड़ा। हरिशंकर परसाई जी ने खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यम वर्गीय मन की सच्चाइयों को बहुत ही निकटता से पकड़ा है। उनकी भाषा-शैली में ख़ास किस्म का अपनापन है, जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लेखक उसके सामने ही बैठा है।

- **करियर**

मात्र अठारह वर्ष की उम्र में हरिशंकर परसाई ने 'वन विभाग' में नौकरी की। वेखण्डवामेंछः माहतक बतौर अध्यापक भी नियुक्त हुए थे। उन्होंन ए दो वर्ष (1941-1943 में) जबलपुर में 'स्पेसट्रेनिंग कॉलिज' में शिक्षण कार्य का अध्ययन किया। 1943 से हरिशंकर जी वहीं 'मॉडल हाईस्कूल' में अध्यापक हो गये। उनकी पहली रचना "स्वर्ग से नरक जहां तक है" मई 1948 में प्रहरी नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। वर्ष 1952 में हरिशंकर

www.ignited.in

परसाई को यह सरकारी नौकरी छोड़ी। उन्होंने वर्ष 1953 से 1957 तक प्राइवेट स्कूलों में नौकरी की। 1957 में उन्होंने नौकरी छोड़कर स्वतन्त्र लेखन की शुरूआत की। [5]

हरिशंकर परसाई और राजनीतिक व्यंग्य

वह विभिन्न राजनीतिक दलों के एजेंडे का मज़ाक उड़ाते हैं, हमारे संस्थानों की अक्षमताओं के बारे में शिकायत करते हैं और विचारों और नैतिकता की आड़ में किए गए अवसरवाद को बुलावा देते हैं। [6]

नए, मूल्यों से संचालित प्रधान मंत्री ने कॉर्पोरेट नेताओं से अपने स्वयं के लाभ को अलग रखने और रोजमर्रा के सामानों की आसमान छूती कीमतों को कम करके लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कहा। अगले दिन, पूरे देश में पूरी तरह से अराजकता है क्योंकि व्यापारी कीमतों में भारी गिरावट करते हैं। आदमी आधी कीमत पर चीनी नहीं खरीदेगा क्योंकि उसे डर है कि उसकी पत्नी उस पर पैसे चुराने का आरोप लगाएगी। स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती जाती है, मुद्रास्फीति के कारण अपने वेतन को कम करने से नाराज सरकारी कर्मचारियों द्वारा एक आम हड़ताल का समापन होता है। औसत आदमी द्वारा सस्ते भोजन को जल्दी से अपचनीय पाया जाता है, और स्वास्थ्य संकट के और बढ़ने से पहले प्रधान मंत्री को व्यवसायियों से कीमतों को उनके पूर्व स्तर पर वापस लाने के लिए एक और दलील देने के लिए मजबूर किया जाता है।

हरिशंकर परसाई के इस संपूर्ण और हास्यास्पद लेख का उद्देश्य इंदिरा के बाद के प्रधान मंत्री द्वारा की गई दलीलों पर प्रहार करना था, लेकिन इसमें आधुनिक समय के मन की बात और कड़ी निंदा के समान समानता है। अपने कई कार्यों में, परसाई पुरानी राजनीतिक व्यवस्था के व्यावहारिक रूप से हर पहलू की आलोचना करते हैं, यहां तक कि विशिष्ट राजनीतिक दलों और मंत्रियों के नाम भी लेते हैं। यह केवल इतना ही नहीं है कि सामग्री शानदार है; लेखक के अवरोध की कमी भी एक आंख खोलने वाला पठन अनुभव बनाती है। उनके लेखों ने शासक और शासित दोनों वर्गों के पाखंड का पर्दाफाश किया है। वह विभिन्न दलों के लक्ष्यों का उपहास उड़ाते हैं, हमारे संस्थानों की अक्षमताओं पर विलाप करते हैं, और नैतिकता और नैतिकता की आड़ में अवसरवादिता की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं, साथ ही राजनीतिक विचारधाराओं के सैद्धांतिक ढांचे में कई खामियों पर चर्चा करते हैं। लेखक खुद को एक पंचलाइन के रूप में इस्तेमाल करते हुए एक बहुत ही आत्म-हीन स्वर का उपयोग करता है।[7]

परसाई की सामाजिक चेतना

परसाई जनशिक्षण के व्यंग्यलेखक हैं। उनके व्यंग्य का उद्देश्य जनता को शिक्षित करना है। उसे परिमार्जित करना है। परसाई हंसाने या गुदगुदाने के लिए हैं ही नहीं। उनकी सामाजिक चेतना ने उन्हें व्यंग्यकार बनाया है। वे लगातार पाठकों को उनके अंतरविरोध के प्रति सचेत करते हैं। परसाई जी की रचनाओं को केवल राजनीतिक व्यंग्य करना बहुत छोटी बात होगी। परसाई बहुत बड़े लेखक और विचारक थे। यह बात भोपाल से आए लेखक, सामाजिक राजनैतिक कार्यकर्ता रामप्रकाश त्रिपाठी ने कही। अवसर था विवेचना थिएटर ग्रुप द्वारा परसाई जन्मदिवस पर आयोजित व्याख्यान का। जहां 'हरिशंकर परसाई और हमारा समय' विषय पर सभी ने अपनी बात रखी।[8]

इस मौके पर साहित्य के आलोचक अरुण कुमार ने कहा कि परसाई के व्यंगय को एक नई दृष्टि से देखे जाने की जरूरत है। उनका व्यंग्य सामाजिक सजगता और जागरुकता का व्यंग्य है। परसाई के अंदर समाज के अंतरविरोध को उघाड़ने और सामने लाने की इच्छा थी। उसने उनको व्यक्तिगत चरित्रों को पढ़ने और उन्हें कहानी का पात्र बनाकर प्रस्तुत करने में सफल बनाया।

राजनीतिक व्यंग्य का महत्व

पैरोडी और व्यंग्य के प्रयोग से स्फूर्तिदायक वार्तालाप प्राप्त किया जा सकता है। राजनीतिक व्यंग्य, चाहे प्रस्तुतकर्ता का मतलब हो या न हो, हमेशा लोगों को दिन के मुद्दों के बारे में बात करता है। सोशल मीडिया की मदद से बातचीत जारी रहती है और आगे भी फैलती है। जॉन स्टीवर्ट और जे लेनो जैसे देर रात के मेजबानों ने भी अपने दर्शकों को चेतावनी दी है कि वे उन्हें बहुत गंभीरता से न लें, इस बात पर जोर देते हुए कि उनके शो शैक्षिक के बजाय मनोरंजक होने के लिए हैं।

वक्ताओं के इस समूह का दावा है कि उनका लक्ष्य किसी भी तरह से दर्शकों की राय को प्रभावित करना नहीं है। यहां तक कि ट्रेवर नूह ने भी इसी तरह की टिप्पणी की। हालांकि राजनीतिक व्यंग्य हमेशा सही नहीं होता, लेकिन कभी-कभी यह एक गंभीर विषय पर प्रकाश डाल सकता है। यहां तक कि जो लोग राजनीति पर ज्यादा ध्यान नहीं देते वे भी राजनीतिक मुद्दों के संपर्क में रहते हैं, और

जितना अधिक वे किसी समस्या के बारे में सुनते हैं, उतना ही वह उनके साथ चिपकी रहती है।[9]

द डेली शो में किन विषयों पर सबसे अधिक चर्चा की गई, यह पता लगाने के लिए वीडियो मॉनिटरिंग सर्विसेज ऑफ अमेरिका (वीएमएसए) डेटाबेस से डेटा का उपयोग किया गया। अधिकांश लोग राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों से जुड़े नवीनतम विकास में रुचि रखते थे। जो लोग आम तौर पर राजनीति पर ज्यादा ध्यान नहीं देते, वे अचानक उम्मीदवारों की खबरों में अधिक रुचि लेने लगते हैं।

यह संभव है कि युवा लोग ही एकमात्र जनसांख्यिकीय हैं जिनके लिए द डेली शो के ये प्रभाव हैं। राजनीतिक व्यंग्य विनोदी होता है, लेकिन अक्सर इसका अर्थ अपेक्षा से अधिक गहरा होता है। द डेली शो और द लेट शो सुस्त से बहुत दूर हैं, इस तथ्य के बावजूद कि वे बहुत कम मीडिया आउटलेट से आते हैं। वे लोगों का ध्यान - गलती से - वापस राजनीति में लाते हैं। इस जांच में मात्रात्मक साक्ष्य का उपयोग किया जाएगा। हास्य सामग्री देखने की बात आने पर लोगों की आदतों पर डेटा एकत्र करने के लिए ईमेल और सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन सर्वेक्षण भेजे जाएंगे।[10]

साहित्य की समीक्षा

यंग, डीजी (2016) बहुत से लोग उनसे कुछ भी सीखने के बजाय अपनी पसंदीदा कॉमेडी में ट्यून करते हैं, जैसा कि हाल के चुनावों से पता चला है। वे लोगों को आशा देते हैं कि वे राजनीति को समझ सकते हैं। राजनीतिक बातचीत में भाग लेने से पहले राजनीतिक हास्य देखने से घबराहट कम हो सकती है और आत्मविश्वास बढ़ सकता है। किसी व्यक्ति की राजनीतिक प्रभावकारिता को इस बात से मापा जा सकता है कि वे राजनीतिक समस्याओं को कितनी अच्छी तरह समझते हैं और सरकार में उनका कितना भरोसा है। राजनेताओं पर द डेली शो का प्रभाव अलग-अलग होता है। सरकार और मीडिया में विश्वास पर इसके नकारात्मक प्रभावों के बावजूद, कार्यक्रम "दर्शकों के विश्वास को बढ़ाने में सफल रहा कि राजनीति का जटिल क्षेत्र समझ में आता है।" बिल माहेर और द डेली शो की मदद से, कॉमेडी सेंट्रल 21 वीं सदी की शुरुआत में वर्तमान व्यंग्य का अग्रणी प्रदाता बन गया। एक प्रीमियम केबल नेटवर्क के रूप में अपनी प्रतिष्ठा के कारण, एचबीओ ने आखिरकार सूट का पालन किया, मेजबानों को और भी अधिक पुरस्कृत किया। जब अन्य लोगों (राजनेता, पत्रकार, आदि) को अपना काम करने का तरीका बताने की बात आई, तो जॉन स्टीवर्ट कभी पीछे नहीं हटे। गेटकीपर के रूप में द डेली शो की भूमिका अपने पूरे इतिहास में सुसंगत रही है।[11]

बेम, जी। (2015) विशेष रूप से जब राजनीतिक कार्रवाई की बात आती है, तो इस प्रकार की खबरों के अपने दर्शकों पर संभावित प्रभावों की जांच करना महत्वपूर्ण है। जैसा कि अक्सर जाना जाता है, व्यंग्य के बड़े पैमाने पर अनुसरणकर्ता होते हैं। राजनीतिक फंडिंग के आंतरिक कामकाज पर अपने दर्शकों को शिक्षित करने के प्रयास में, द कोलबर्ट रिपोर्ट ने पहली बार 2001 में सुपर पीएसी के विषय को उठाया। कोलबर्ट का लक्ष्य संयुक्त राज्य अमेरिका में राजनीतिक वित्तपोषण की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करना था। इससे भी आगे, कोलबर्ट ने अपने सुपर पीएसी, बेहतर कल के लिए अमेरिकियों की स्थापना की। रॉयटर्स के एक ऑनलाइन सर्वेक्षण में पाया गया कि जॉन स्टीवर्ट को व्यापक रूप से मीडिया की सबसे विश्वसनीय आवाज़ों में से एक माना जाता है।[12]

डे, ए। (2015) मुद्दों को इस तरह से फिर से तैयार किया जा सकता है जो उनके लिए उनके महत्व पर जोर देता हो। अधिकांश दर्शक समाचार देखते हैं क्योंकि वे महत्वपूर्ण विषयों पर सूचित और शिक्षित होना चाहते हैं। पत्रकार अपने पसंदीदा विषयों को इस आधार पर चुनते हैं कि वे किसे सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। कार्यसूची की स्थापना सिद्धांत मानता है कि यद्यपि मीडिया हमें यह सिखाने में अप्रभावी है कि कैसे सोचना है, वे विशेष विषयों की ओर बातचीत को चलाने में बहुत अच्छे हैं। जनसंचार का एक सिद्धांत है जिसे "उद्देश्य और संतुष्टि" कहा जाता है जो उन तरीकों का विश्लेषण करता है जिसमें व्यक्ति मीडिया का उपयोग करते हैं और ऐसा करने से उन्हें संतुष्टि मिलती है। जो लोग "दैनिकप्रदर्शन" और "देरसेप्रदर्शन" जैसे प्रदर्शन देखते हैं, उनका कहना है कि वे उन्हें पसंद करते हैं क्योंकि वे कई तरह की ज़रूरतों को पूरा करते हैं। जब लोग हास्य को "समझते" हैं तो स्वीकार किए जाने की सुविधा होती है।[13]

फ्राइ, एन। (2018) एजेंडा-सेटिंग थ्योरी के मैकेनिज्म की खोज का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने पहली टिप्पणी की कि "प्रेस सूचना और राय के स्रोत से कहीं अधिक है।" लोगों को अपने मन को बदलने के लिए राजी करना हमेशा अच्छा नहीं होता है, लेकिन यह उन्हें विचार के लिए भोजन देने का शानदार काम करता है। 1972 में मैक्सवेल मैककॉम्ब्स और डोनाल्ड शॉ द्वारा किए गए शोध ने कोहेन के विचारों का समर्थन किया। चूंकि मैककॉम्ब्सने एजेंडा-सेटिंग अवधारणाओं को सामान्यीकृत

किया और उन्हें फ़्रेमिंग और प्राइमिंग जैसे सिद्धांतों से जोड़ा, उन्हें आम तौर पर एजेंडा-सेटिंग के क्षेत्र में प्राथमिक अग्रणी माना जाता है। एजेंडा को परिभाषित करने के पीछे की धारणा तकनीकी प्रगति के साथ विकसित और विस्तारित होती है। अब जब राजनीति शामिल हो गई है, भविष्य के अध्ययन इस बात की जांच कर सकते हैं कि क्या पैरोडी एक राजनीतिक उद्देश्य को पूरा करती है। मीडिया एक्सपोजर और सामाजिक समस्याओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए दर्शकों की इच्छा के बीच संबंध भी इस सिद्धांत द्वारा पहचाने जाते हैं। इन मुद्दों को बेहतर ढंग से समझने के लिए, जनता राजनीतिक व्यंग्य द्वारा प्रदान की गई रूपरेखा का उपयोग कर सकती है, जिससे उनकी राजनीतिक साक्षरता भी बढ़ती है।[14]

वेनब्रोट एच। (2015) रेडियो के प्रति 1940 के दशक के आकर्षण के बारे में शोध। उनके शोध ने मीडिया आनंद के क्षेत्र के लिए मार्ग प्रशस्त किया, जिसे उन्होंने अपने अध्ययन, दैनिक धारावाहिक श्रोताओं की प्रेरणा और संतुष्टि के बाद "उपयोग और संतुष्टि" का नाम दिया। "उद्देश्य और संतुष्टि" मीडिया का अध्ययन करने का एक तरीका है जो "उन उपयोगों पर ध्यान केंद्रित करता है जिनके लिए लोग मीडिया डालते हैं और उन उपयोगों से वे संतुष्टि चाहते हैं।" 1973 में, एलिहू काट्ज़, जे ब्लमलर, और माइकल गुरेविच "उपयोग और आनंद" की धारणा के साथ आए, जो प्रस्तावित करता है कि लोग व्यक्तिगत आवश्यकता के जवाब में अपने टेलीविजन देखने के निर्णयों का चयन करते हैं। यह दृष्टिकोण इस बात पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है कि व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संचार के कुछ तरीकों का सहारा क्यों लेते हैं। शोधकर्ताओं ने दिखाया है कि "कम से कम तीन अलग-अलग स्रोत" हैं जिनसे लोगों को संतुष्टि मिल सकती है: स्वयं मीडिया सामग्री, स्वयं मीडिया उपभोग का कार्य और वह सामाजिक संदर्भ जिसमें उत्तरार्द्ध होता है। दर्शकों की ज़रूरतें समय काटने की साधारण आवश्यकता से लेकर कुछ नया सीखने, मुस्कुराने, या यहाँ तक कि रोने की अधिक जटिल इच्छाओं तक हो सकती हैं।[15]

निष्कर्ष

लेखक हरिशंकर परसाई को व्यापक रूप से हिंदी के बेहतरीन व्यंग्यकारों और हास्यकारों में से एक माना जाता है। चाहे कक्षा में हो या मंच पर, परसाई की अजीबोगरीब मानवीय व्यवहार और समाज पर की गई टिप्पणियों की प्रस्तुति को उत्साही दर्शक मिले हैं। व्यापक विश्वव्यापी दर्शकों के लिए लेखक की मौलिकता को पेश करने की उम्मीद के साथ, अभिनेता और निर्देशक प्रतीक कोठारी आज मुंबई में हरिशंकर परसाई के तुचियापे व्यंग्य नामक एक प्रस्तुति में हरिशंकर परसाई की तीन कहानियों का प्रदर्शन करेंगे।परसाई जी ने जिस प्रकार सरल भाषा में अपने शब्दों से मानवीय बुराइयों, प्राचीन सोच और धार्मिक पाखंड पर प्रहार किया, उसका उदाहरण साहित्य में नहीं मिलता। परसाई ने धर्म, जाति, राजनीति, विवाह, मानवीय गुण-दोष सब कागजों पर उतारकर उस पर अपनी कलम की नोक ऐसी चुभोई कि रस लेने के साथ-साथ पाठक बेचैन हो उठता है।

संदर्भ

1. बेम, जी। (2017) 'टेलीविज़ुअल स्फीयर में क्राफ्टिंग न्यू कम्युनिकेटिव मॉडल: द डेली शो पर राजनीतिक साक्षात्कार' द कम्युनिकेशन रिव्यू, वॉल्यूम। 10, नहीं। 2, 93-115।
2. बेकर, ए.बी., ज़ेनोस, एमए, और वेसनन, डी.जे. (2015)। दैनिक शो को आकार देना: राजनीतिक कॉमेडी प्रोग्रामिंग के दर्शकों की धारणा। संचार के अटलांटिक जर्नल, 18(3), 144-157
3. ब्रेवर, पीआर, यंग, डी।, और मोरेले, एम। (2015)। "फर्जी समाचार" के बारे में वास्तविक समाचार का प्रभाव: इंटरटेक्स्टुअल प्रक्रियाएं और राजनीतिक व्यंग्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पब्लिक ओपिनियन रिसर्च, 25, 323-343।
4. काओ, एक्स। (2018)। जॉन स्टीवर्ट से इसे सुनना: राजनीति के प्रति जनता के ध्यान पर दैनिक शो का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पब्लिक ओपिनियन रिसर्च, 22(1), 26-46
5. ब्रेवर, पी.आर. (2018)। राजनीतिक कॉमेडी शो और राजनीति में जनता की भागीदारी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पब्लिक ओपिनियन रिसर्च, 20(1), 90-99।
6. डाहलग्रेन, पी. (2019)मीडिया एंड पॉलिटिकल एंगेजमेंट: सिटिजन्स, कम्युनिकेशन एंड डेमोक्रेसी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।
7. हॉफमैन, एलएच, और यंग, डीजी (2016) व्यंग्य, पंच लाइन्स, और रात की खबर: राजनीतिक भागीदारी पर अनटैंगलिंग मीडिया प्रभाव। संचार अनुसंधान रिपोर्ट, 28(2), 159-168।

8. काट्ज़, ई।, ब्लमलर, जेजी, और गुरेविच, एम। (2018)। उपयोग और संतुष्टि शोध.. पब्लिक ओपिनियन क्वार्टरली, 37(4), 509.
9. नीमी, आर.जी.; क्रेग, एस.सी.; माटेई, एफ। (2017)। 1998 के राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन में आंतरिक राजनीतिक प्रभावकारिता को मापना। द अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू, 85, 1407-1413।
10. एक्सनोस, एम.ए., और बेकर, ए.बी. (2019)। ज़ेन के क्षण: सूचना मांगने और राजनीतिक शिक्षा पर दैनिक शो के प्रभाव। राजनीतिक संचार, 26(3), 317-332।
11. यंग, डीजी (2016)। हँसी, सीख या आत्मज्ञान? डेली शो और कोलबर्ट रिपोर्ट के पीछे देखने और बचने की मंशा। जर्नल ऑफ ब्रॉडकास्टिंग एंड इलेक्ट्रिक मीडिया, 57(2), 153-169।
12. बेम, जी। (2015) द डेली शो: डिस्कर्सिव इंटीग्रेशन एंड द रिइन्वेंशन ऑफ पॉलिटिकल जर्नलिज्म। राजनीतिक संचार। 22: 3, 259-276।
13. डे, ए। (2015)। वार्तालाप को स्थानांतरित करना: कोलबर्ट का सुपर पीएसी और व्यंग्यात्मक प्रभावकारिता का मापन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन 7:1, 414-429।
14. फ्राइ, एन। (2018)। व्यंग्य की प्रकृति। टोरंटो विश्वविद्यालय त्रैमासिक 14 (1), 75- 89।
15. वेनब्रोट एच। (2015)। मेनिप्पियन व्यंग्य पर पुनर्विचार: पुरातनता से अठारहवीं शताब्दी तक। बाल्टीमोर; जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस, 16 (1), 112- 142।

वेबसाइटें

https://thewire.in/books/harishankar-parsai-satirist

https://www.asianage.com/life/more-features/290619/in-pursuit-of-parsai.html

https://en.wikipedia.org/wiki/Harishankar_Parsai

https://en.wikipedia.org/wiki/Political_satire

Corresponding Author

राजेन्द्र कुमार पिवहरे*

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय महाविद्यालय वेंकटनगर, जिला अनूपपुर(मध्यप्रदेश)